ISSN: 2583-0511 (Online), www.pashupalakmitra.in

कुत्तों में टीकाकरण: कार्यक्रम एवं महत्वपूर्ण जानकारियां

डॉ. उमा कांत वर्मा[1], डॉ. शिव कुमार त्यागी[1], डॉ. स्वरूप देबरॉय[2], डॉ. दिग्विजय सिंह[3], डॉ. नरेंद्र कुमार[4], डॉ. राम बचन[5] एवं डॉ. शैलेन्द्र चौरसिया[5]*

[1]सहायक प्राध्यापक, पशु आनुवंशिकी एवं प्रजनन, बांदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बांदा

[2]सहायक प्राध्यापक, पशु शरीर रचना विज्ञान, बांदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बांदा

[3]सहायक प्राध्यापक, पशु पोषण, बांदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बांदा

[3]सहायक प्राध्यापक, पशु उत्पादन एवं प्रबंधन, बांदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बांदा

[4]सहायक प्राध्यापक, पशु चिकित्सा जैव रसायन, बांदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बांदा

[5]सह- प्राध्यापक, पशु शरीर रचना विज्ञान, बांदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बांदा

टीकाकरण पालतू कुत्ते को अत्यधिक संक्रामक, लाइलाज या संभावित रूप से घातक बीमारियों से बचाता हैं। पाँच साल पहले भी, घरेलू पालतू जानवरों में कैनाइन डिस्टेंपर वायरस (CDV) और कैनाइन पार्वोवायरस (CPV) संक्रमण इतने आम नहीं थे। आज, अपने पिल्ले को इन संक्रमणों से बचाने का एकमात्र तरीका कुत्ते के टीकाकरण कार्यक्रम का ठीक से पालन करना है। 2020 के लॉकडाउन के दौरान पशु चिकित्सा सुविधाओं की कमी के कारण, कई पालतू जानवरों ने अपने वार्षिक टीकाकरण नहीं करवाए और इसके परिणामस्वरूप दुनिया भर में घरेलू पालतू जानवरों में वायरल संक्रमण में तेज़ी से वृद्धि हुई। दुर्भाग्य से, इनमें से अधिकांश बीमारियों का कोई इलाज नहीं है और अगर कोई कुत्ता इन संक्रमणों से बच भी जाता है, तो भी उसके जीवन भर के दुष्प्रभाव होते हैं, जिनमें तंत्रिका संबंधी समस्याएं, पाचन संबंधी समस्याएं, हृदय संबंधी समस्याएं, सांस लेने में तकलीफ और/या गतिशीलता संबंधी समस्याएं शामिल हैं। हालांकि कई पालतू पशु पालक टीकाकरण की लागत और बूस्टर की आवर्ती लागत को लेकर चिंतित रहते हैं, लेकिन कुत्तों के लिए अनिवार्य टीके समय पर लगवाना उन

ISSN: 2583-0511 (Online), www.pashupalakmitra.in

बीमारियों के इलाज से कहीं सस्ता है जिनकी रोकथाम की जानी चाहिए। अपने पिल्ले और कुत्ते को स्वस्थ रखने का एकमात्र तरीका उचित टीकाकरण कार्यक्रम का पालन करना है। कभी भी कोई टीकाकरण या बूस्टर टीका न चूकें। टीकाकरण में 10 दिन की भी देरी आपके पिल्ले के स्वास्थ्य पर गंभीर परिणाम डाल सकती है। अपने पिल्ले का टीकाकरण समय पर करवाने के लिए अपने आस-पास के किसी भी पशु चिकित्सक से संपर्क करें।

कुत्तों के टीकाकरण क्या हैं?

कुत्तों और पिल्लों के टीकाकरण, टीकों की एक श्रृंखला है जो आपके कुत्ते को स्वस्थ रहने और बीमारी को फैलने से रोकने के लिए जीवन भर लगवाने होंगे। जब आपके कुत्ते या पिल्ले का टीकाकरण होता है, तो उन्हें एंटीजन युक्त एक टीका दिया जाता है जो रोग पैदा करने वाले जीव की नकल करके आपके कुत्ते की प्रतिरक्षा प्रणाली को उत्तेजित करता है। यह आपके पिल्ले की प्रतिरक्षा प्रणाली को उस जीव को पहचानने के लिए प्रशिक्षित करता है ताकि अगर वे वास्तविक जीवन में कभी उस जीव के संपर्क में आएँ, तो उनकी प्रतिरक्षा प्रणाली उससे बेहतर तरीके से लड़ने में सक्षम हो।

कुत्तों और पिल्लों के लिए कृमिनाशक दवाइयाँ:

पिल्लों और कुत्तों में आंत्र परजीवी आम हैं। कृमिनाशक दवा कुत्तों को इन परजीवियों से होने वाली संभावित बीमारियों से बचा सकती है। पाइरेंटेल या फेनबेंडाज़ोल जैसी कृमिनाशक दवा 3 सप्ताह की उम्र से हर दो सप्ताह में दी जानी चाहिए। जब पिल्ला 8 सप्ताह का हो जाता है, तो उसे मासिक रूप से हार्टवर्म निवारक दवा दी जा सकती है जिसमें आंत्र कृमियों के लिए कृमिनाशक भी शामिल होता है। नियमित कृमिनाशक सभी प्रकार के आंत्र परजीवियों का इलाज नहीं करते हैं, इसलिए आंत्र परजीवियों के लिए अतिरिक्त मल परीक्षण की भी अत्यधिक जरुरत है।

ISSN: 2583-0511 (Online), www.pashupalakmitra.in

टीकाकरण से पहले और बाद में देखभाल:

टीकाकरण हमेशा स्वस्थ पशु को ही दिया जाना चाहिए, जिसका कृमिनाशक उपचार किया गया हो (टीकाकरण की तिथि से एक सप्ताह पहले)। यदि पशु स्वस्थ है और उसमें परजीवी नहीं हैं, तो यह और भी बेहतर प्रभावी होगा। टीकाकरण प्रक्रिया शुरू करने से पहले, एक स्वस्थ रिपोर्ट प्राप्त करने के लिए, पूरी जाँच के लिए पशु चिकित्सक से परामर्श लेना अनिवार्य है। कुत्तों के टीकाकरण आम तौर पर सुरक्षित होते हैं, लेकिन कुछ कुत्तों को हल्की प्रतिक्रियाएँ हो सकती हैं। सामान्य दुष्प्रभावों में हल्का बुखार, सुस्ती या इंजेक्शन वाली जगह पर हल्की बेचैनी शामिल है। ये लक्षण आमतौर पर 24 घंटों के भीतर ठीक हो जाते हैं। हालाँकि, यदि लक्षण बने रहते हैं या बिगड़ जाते हैं, तो तुरंत अपने पशु चिकित्सक से परामर्श लें। टीकाकरण कार्यक्रम का पालन करके और यह सुनिश्चित करके कि आपके कुत्ते को अनिवार्य टीके लगें, आप अपने पालतू जानवर को गंभीर और संभावित रूप से घातक बीमारियों से बचाने के लिए आवश्यक कदम उठा रहे हैं। नियमित रूप से पशु चिकित्सक के पास जाना और टीकाकरण के बारे में अपडेट रहना आपके कुत्ते को आने वाले वर्षों तक स्वस्थ और खुश रखने में मदद करेगा।

कुत्तों के लिए टीकाकरण कार्यक्रम:

कुत्ते का टीका	**पिल्लों का टीकाकरण (16 सप्ताह या उससे कम उम्र में)**	**वयस्क कुत्ते का टीकाकरण (16 सप्ताह से अधिक)**	**बूस्टर टीकाकरण**	**टिप्पणियाँ**
रेबीज़ 1-वर्ष	पहली खुराक, 3 महीने की उम्र से ही दिया जा सकता है।	एकल (Single) खुराक	वार्षिक बूस्टर आवश्यक हैं।	रेबीज़ कुत्तों के लिए 100% घातक है, और इसका कोई इलाज उपलब्ध नहीं है। रोकथाम ही महत्वपूर्ण है।
रेबीज़ 3-वर्ष	इसे 3 महीने की उम्र से ही एक खुराक के रूप में	एकल (Single)	1 वर्ष के बाद दूसरा टीकाकरण, फिर हर 3 वर्ष में बूस्टर टीकाकरण की	-

	दिया जा सकता है।	खुराक	सलाह दी जाती है।	
कैनिन डिस्टेंपर	कम से कम 3 खुराकें, 6 से 16 सप्ताह की आयु के बीच दी जाती हैं।	2 खुराकें, 3-4 सप्ताह के अंतराल पर दी जाती हैं।	पिल्लों में 1 वर्ष बाद बूस्टर लगवाए, वयस्क कुत्तों को हर 3 वर्ष या उससे अधिक अवधि में बूस्टर की आवश्यकता होती है।	वायुजनित वायरस के कारण होने वाला डिस्टेंपर एक गंभीर रोग है, जो अन्य समस्याओं के अलावा, स्थायी मस्तिष्क क्षति का कारण बन सकता है।
पार्वोवायरस:	कम से कम 3 खुराकें, 6 से 16 सप्ताह की आयु के बीच दी जाती हैं।	2 खुराकें, 3-4 सप्ताह के अंतराल पर।	पिल्लों में 1 वर्ष बाद बूस्टर लगवाए, वयस्क कुत्तों को हर 3 वर्ष या उससे अधिक अवधि में बूस्टर की आवश्यकता होती है।	कुत्तों में "पार्वो" संक्रमण से उल्टी और खूनी दस्त हो सकते हैं। अगर इलाज न किया जाए तो पार्वो आमतौर पर जानलेवा होता है।
एडेनोवायरस, प्रकार 1 (CAV-1, कैनाइन हेपेटाइटिस)	यह टीके पर निर्भर करता है। उदाहरण के लिए, इंट्रानेजल टीके को साल में एक बार बूस्टर लगवाना पड़ता है।	वैक्सीन पर निर्भर करता है	पिल्लों में 1 वर्ष बाद बूस्टर लगवाए, वयस्क कुत्तों को हर 3 वर्ष या उससे अधिक अवधि में बूस्टर की आवश्यकता होती है।	संक्रमित लार, मूत्र और मल के माध्यम से फैलने वाला; कैनाइन हेपेटाइटिस गंभीर यकृत क्षति और मृत्यु का कारण बन सकता है।
एडेनोवायरस, प्रकार 2 (CAV-2, केनेल खांसी)	कम से कम 3 खुराक, 6 से 16 सप्ताह की आयु के बीच	2 खुराक, 3-4 सप्ताह के अंतराल पर	पिल्लों को 1 वर्ष बाद बूस्टर की आवश्यकता होती है, फिर सभी कुत्तों को हर 3 वर्ष या अधिक बार बूस्टर की आवश्यकता होती है।	खाँसी और छींक से फैलता है।
पैराइन्फ्लुएंजा	6-8 सप्ताह की आयु में दिया जाता है, फिर 12-14 सप्ताह की आयु तक हर 3-4 सप्ताह में दिया जाता है	1 खुराक	एक वर्ष के बाद बूस्टर टीकाकरण आवश्यक हो सकता है; हर 3 वर्ष में पुनः टीकाकरण सुरक्षात्मक माना जाता है।	पैराइन्फ्लुएंजा संक्रमण (कैनाइन इन्फ्लूएंजा जैसा नहीं) से खांसी और बुखार होता है। यह बोर्डेटेला संक्रमण से जुड़ा हो सकता है।

ISSN: 2583-0511 (Online), www.pashupalakmitra.in

बोर्डेटेला ब्रोंकिसेप्टिका (केनेल खांसी)	यह टीके के प्रकार पर निर्भर करता है; सुरक्षा के लिए आमतौर पर एक खुराक की आवश्यकता होती है	इंट्रानेजल या मौखिक (oral) टीका की 1 खुराक, या इंजेक्शन टीका की 2 खुराक	उच्च जोखिम वाले वातावरण में कुत्तों के लिए वार्षिक या 6 महीने के बूस्टर की सिफारिश की जा सकती है।	यह कोई गंभीर बीमारी नहीं होती, हालाँकि छोटे पिल्लों में यह खतरनाक हो सकती है।
लाइम की बीमारी	1 खुराक, 9 सप्ताह की उम्र में दी जाती है, तथा दूसरी खुराक 2-4 सप्ताह बाद दी जाती है	2 खुराकें, 2-4 सप्ताह के अंतराल पर	टिक सीजन शुरू होने से पहले, सालाना इसकी आवश्यकता हो सकती है	आमतौर पर केवल उन कुत्तों के लिए अनुशंसित, जिनमें लाइम रोग फैलाने वाले टिक्स के संपर्क में आने का उच्च जोखिम होता है।
लेप्टोस्पाइरोसिस	पहली खुराक 8 सप्ताह की उम्र में, दूसरी खुराक 2-4 सप्ताह बाद	2 खुराकें, 2-4 सप्ताह के अंतराल पर	उच्च जोखिम वाले क्षेत्रों में कुत्तों के लिए कम से कम एक बार वर्ष में	टीकाकरण आमतौर पर केवल पहले से रोग ग्रस्त क्षेत्रों तक ही सीमित होता है। कृन्तकों और रुके हुए पानी के संपर्क में आने से लेप्टोस्पायरोसिस संक्रमण हो सकता है।
कैनाइन इन्फ्लूएंजा	पहली खुराक 6-8 सप्ताह की उम्र में; दूसरी खुराक 2-4 सप्ताह बाद	2 खुराकें, 2-4 सप्ताह के अंतराल पर	सालाना	गैर-मुख्य कुत्तों का टीका। बोर्डेटेला के समान

ISSN: 2583-0511 (Online), www.pashupalakmitra.in

रेबीज से सम्बंधित महत्वपूर्ण जानकारियां

कुत्ते के टीकाकरण के दुष्प्रभाव:

जब आप एक या दो दिन तक उस पर कड़ी नज़र रख सकें और किसी भी गंभीर प्रतिकूल प्रतिक्रिया के संकेत पर अपने पशु चिकित्सक को बुला सकें, ऐसे समय पर अपने कुत्ते को टीकाकरण करवाना सबसे अच्छा है। पिल्ले और कुत्ते के टीकाकरण आपके कुत्ते को स्वस्थ रखने का एक अनिवार्य हिस्सा हैं ताकि वे लंबा और खुशहाल जीवन जी सकें। टीकाकरण दुष्प्रभाव के प्रमुख लक्षण इस प्रकार है:

- इंजेक्शन वाली जगह पर दर्द या सूजन
- भूख न लगना, उल्टी, दस्त, बुखार इत्यादि
- साँस लेने में कठिनाई
- चेहरे या पंजों पर पित्ती या सूजन
- एनाफिलेक्टिक शॉक, जिसमें दौरे और/या बेहोशी शामिल हो सकती है

निष्कर्ष:

टीकाकरण पालतू कुत्तो को अत्यधिक संक्रमण एवं बीमारियों से बचाता हैं। यह जूनोटिक रोगों के प्रसार को कम करता है, जो ऐसे रोग हैं जो जानवरों से मनुष्यों में फैल सकते हैं। टीकाकरण पालतू कुत्तो की देखभाल का एक प्रमुख घटक है, जो आपके कुत्ते के स्वास्थ्य और खुशी को सुनिश्चित करता है। इन बीमारियो के सन्दर्भ मे यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि बीमारी का संक्रमण से बचाव के लिए टीकाकरण करना अति आवश्यक है। अपने कुत्ते को बूस्टर टीके लगवाते रहना और उसे ऐसी परिस्थितियों से बचाना जो उसके स्वास्थ्य के लिए ख़तरा बन सकती हैं, इन बीमारियो के ख़तरे को काफ़ी कम कर देता है।